''भीतर का पर्यावरण शुद्ध बनाएं''

- युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 5 जून, 2009।

''शरीर व्यक्ति के जीवन का अभिन्न अंग है। न केवल मनुष्य का शरीर होता है पृथ्वी, पानी आदि जीवों का भी शरीर होता है। एक युवा व्यक्ति में जो सौंदर्य देखने को मिलता है, वह सौंदर्य कभी बुढ़ापा आने पर कायम नहीं रहता। वृद्धावस्था में उसका रूप विऔत हो जाता है। इसी तरह चलने में जो सक्षम था वह भी बुढापा आने पर कमजोर हो जाता है चलने में कठिनाई पैदा हो जाती। शरीर औदारिक है इसमें विभिन्न स्थितियां पैदा होती है। बुढापा आता है और उस समय आदमी चित्त समाधि रखे यह खास बात है।''

ये विचार युवाचार्य महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति को चिंतन करना चाहिए कि शरीर नश्वर है इसलिए इस विनासधर्मा तत्व में जो आत्मा है उस पर ध्यान दें उसके कल्याण के लिए प्रयास करें।

युवाचार्य महाश्रमण ने पर्यावरण दिवस पर अपने उद्बोधन में कहा कि पर्यावरण को दूषित करने वाले तत्व पर्यावरण की समस्या न बने उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी बाहर के पर्यावरण के साथ-साथ अपने भीतर अहिंसा, संयम पर ध्यान दे तो व्यक्ति के स्वयं का जीवन भी अच्छा बन सकता है।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि पर्यावरण संरक्षण में जैन धर्म की विशेष भूमिका रही है अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर देश भर में वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है।

अशोक सियोल
99829 03770